Dr. Ranjeet Kumar.
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.

M.A. Sem-III
CC-10, Unit-III

आर. सी. मजूमदार :- 4 दिसम्बर 1888 को फरीदपुर जिले (अब बांग्लादेश में) के खंडारपारा में हलधर मजूमदार और बिधुमुखी के घर जन्मे रमेशचन्द्र मजूमदार ने अपना बचपन गरीबी मे बिताया। उन्होंने ढ़ाका और कलकत्ता के विभिन्न स्कूलों में अध्ययन किया और अंततः 1905 में उन्होंने कटक के रेवेनशॉ कॉलेज से अपनी प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की। 1907 में उन्होंने सुरेन्द्रनाथ कॉलेज से प्रथम श्रेणी की छात्रवृति के साथ एफ.ए. पास किया और प्रेसिडेंसी कॉलेज कोलकाता में शामिल हो गए। क्रमशः 1909 और 1911 में बी.ए. (ऑनर्स) और एम.ए. (इतिहास) में स्नातक होने के बाद, उन्होंने 1913 में अपने शोध कार्य के लिए प्रेमचंद्र रॉयचंद छात्रवृति जीते। मजूमदार ने अपने शिक्षण कैरियर की शुरुआत सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज ढ़ाका में एक व्याख्याता के रूप में की थी। 1914 से उन्होंने कलकत्ता विवि. में इतिहास के प्रोफेसर के रूप में सात साल बिताए। उन्होंने अपना थीसिस, प्राचीन भारत में कॉर्पोरेट जीवन के लिए डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। 1921 में वे नव-स्थापित ढ़ाका विवि. में इतिहास के प्रोफेसर बन गए। उन्होंने इतिहास विभाग के प्रमुख और कला संकाय के डीन के रूप में भी कार्य किया। जब तक कि वे इसके कुलपति नहीं बन गए। 1934 एवं 1936 के बीच, वे जगन्नाथ हॉल के प्रोवोस्ट थे। फिर वे 1937 से 1942 तक पाँच साल के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति बने। 1950 से, वे बनारस हिंदु विश्वविद्यालय के इंडोलॉजी कॉलेज के प्रिंसिपल थे। उन्हें भारतीय इतिहास कॉंग्रेस का महासचिव चुना गया। और वे मानव जाति के लिए इतिहास के लिए यूनेस्को द्वारा स्थापित 'मानव जाति' के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास के इतिहास के लिए अंतर्राष्ट्रीय आयोग (1950-1969) के उपाध्यक्ष भी बने।

वैद्य परिवार से आने वाले आर.सी. मजूमदार ने प्राचीन भारत पर अपना शोध कार्य शुरु किया। दक्षिण पूर्व एशिया की व्यापक यात्राओं और शोध के बाद उन्होंने चम्पा (1927),

सुवर्णद्वीप (1938) और कंबुज देश (1944) का विस्तृत इतिहास लिखा। भारतीय विद्या भवन की पहल पर उन्होंने भारतीय इतिहास पर एक बहु-खंडीय ग्रंथ के सम्पादक का बीड़ा उठाया। 1951 से शुरू करके उन्होंने 26 साल तक वैदिक काल से लेकर भारत की स्वतंत्रता तक के भारतीयों के इतिहास को ग्यारह खंडों में वर्णित करने के लिए कड़ी मेहनत की।

एक स्वतंत्र विचार वाले शोधकर्ता के रूप में मजूमदार ने 1957 में स्वतंत्रता आंदोलन का एक विस्तृत और अत्यधिक विवादास्पद इतिहास तीन खण्डों की श्रृंखला में प्रकाशित किया, जिसका शीर्षक था "भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, हिंदू-मुस्लिम संबंध, स्वदेशी आंदोलन, गांधी की भूमिका और उग्र राष्ट्रवाद जैसे विभिन्न विषयों पर कई प्रचलित धारणाओं को चुनौती देते हुए।

आधुनिक हिन्दू-राष्ट्रवादियों ने उनकी विरासत पर दावा किया है - और कभी-कभी इसका इस्तेमाल भी किया है। तथ्य यह है कि इतिहासकार ने भारत के हिन्दू-मुस्लिम द्विध्रुवीयता के बारे में नेहरू की नीति को चुनौती दी, इस आम धारणा का खण्डन किया कि ब्रिटिश शासन के आगमन के पहले हिन्दू और मुसलमान सद्भाव में रहते थे और हिंदू-मुस्लिम तनाव ब्रिटिशों की फूट डालो और राज करो की नीति का नतीजा था। लेखक का मानना है कि ये दोनों समुदाय एक ही तरह से रहते थे।" अलग-अलग संस्कृतियों और अलग-अलग मानसिक और नैतिक विशेषताओं वाले दो अलग-अलग समुदाय।

हबीब लिखते हैं, "अक्सर अप्रमाणित परिकल्पनाएँ और अनुमान जो उन्होंने दिए, वे सभी भारत में शिक्षित लोगों की एक बड़ी श्रृंखला के लिए दृढ़ सत्य बन गए हैं।